अज्ञेय के कथा-साहित्य में आधुनिकता बोध : एक अध्ययन

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) लखनऊ के हिन्दी
विषय में पीएच.डी.की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध-संक्षिप्तिका

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY
•LUCKNOW•
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

नमिता
19.10.2022

शोध-निर्देशिका
डॉ० नमिता जैसल
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग

डॉ० नमिता जैसल
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ, 226025

वैभव
शोध छात्रा
कु० वैभव
ना०सं०-1001/19
हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025

2022

Scanned with CamScanner

शोध संक्षिप्तिका

अज्ञेय हिन्दी के बहुचर्चित उपन्यासकार हैं। अपनी पद्य एवं गद्य रचनाओं से अज्ञेय ने आधुनिक हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाया है। अज्ञेय ने भारतीय एवं पाश्चात्य वाङ्मय का गहन अध्ययन किया है। साहित्य और समाज से संबंधित कई पाश्चात्य एवं भारतीय अवधारणाओं से अज्ञेय परिचित हैं। व्यक्ति जीवन और सामाजिक जीवन के प्रति अज्ञेय के विचार मौलिक हैं। व्यक्ति और समाज की अन्योन्याश्रितता का वे समर्थन करते हैं। व्यक्ति और समाज को एक दूसरे के पूरक के रूप में वह स्वीकार भी करते हैं। सामाजिक स्थितियों के नेपथ्य में व्यक्ति जीवन के विकास की और व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसकी स्वस्थ जीवन शैली के नेपथ्य में समाज की स्वस्थ संरचना की अज्ञेय आकांक्षा करते हैं। मानव मन के सूक्ष्म चितेरे के रूप में अज्ञेय अपने तीनों उपन्यासों में दर्शन देते हैं।

अज्ञेय के उपन्यासों की विशिष्टता यह है कि उन में वैयक्तिक जीवन और सामाजिक जीवन के सरोकारों को प्रमुखता दी गयी है। व्यक्ति की कुंठा, संत्रास एवं संघर्ष को व्यवस्थाजन्य विसंगतियों के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय ने चित्रित किया है। व्यक्ति और समाज के संबंधों का चित्रण करने के संदर्भ में अज्ञेय की विचारधारा परिष्कृत रूप में लक्षित होती है। व्यक्ति की विचारधारा के निर्माण में प्रेरक सामाजिक तत्वों की भूमिका को उपन्यासकार अज्ञेय स्वीकार करते हैं। इसी कारण से आलोच्य उपन्यासों में व्यक्ति को केन्द्र में रखकर सामाजिक यथार्थ का निरूपण करना और व्यवस्था को केन्द्र में रखकर व्यक्ति जीवन के आंतरिक यथार्थ का विश्लेषण करना संभव हो गया है।

अज्ञेय ने आधुनिकता के बारे बताने का प्रयास किया है कि आधुनिकता क्या होती है। अज्ञेय बताते है कि मार्डन शब्द का प्रयोग छठी शताब्दीं में समकालीन तथा प्राचीन लेखों अथवा विषयों में अन्तर करने के लिए किया जाता था। सत्रहवी शताब्दी में आधुनिकता शब्द का प्रयोग सीमित तथा तकनीकी के सन्दर्भ में किया जाने लगा है। इसी तरह जब आज का पूरा समाज आधुनिक परिवेश में अपना

जीवन व्यतित करने लगा तो समय के साथ–साथ उसके साथ कुछ न कुछ घटनाये भी होने लगी जिससे मनुष्य चिन्तन की प्रक्रिया में पँहुच गया और अपने साथ हो रहे घटनाओं के खिलाफ आवाज उठाने, भविष्य–निर्माण के लिए संघर्ष करने, वर्तमान को सुधारने, नैतिक ह्मस को रोकने और उत्पीड़ित मनुष्य के साथ एकात्म होकर उसकी मुक्ति के लिए उपाय खोजने को भी आधुनिकता बोध कहा जाता है। मुक्तिबोध के अनुसार अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करना भी आधुनिकता का बोध कहलाता है।

मानव समाज कई वर्षों से विभिन्न प्रकार की मान्यताओं, परम्पराओं आदि को लेकर चलता आया है कुछ परम्पराएँ, मान्यताएं, जीवन–शैली से जुड़ी है, तो कुछ लोगों की मानसिकता से तो कई प्रचलित मान्यताओं ने तो समाज एवं मनुष्य के जीवन को पूरी तरह खोखला बना डाला है। कर्म का क्षेत्र हो या धर्म का ऐसी मान्यतायें सर्वत्र परिलक्षित होती रहती है। ऐसे में जब मनुष्य अपनी मुक्ति के लिए ठान लेता है तो वह इन सब रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ने की कोशिश करता है। रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार– जिसे हम आधुनिकता कहते है वह एक प्रक्रिया का नाम है, यह प्रक्रिया बुद्धिजीवी बनने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया धर्म के सही रूप पर पहुँचने की प्रक्रिया है। आधुनिकता वह है जो मनुष्य की ऊँचाई उसकी जाति या गोत्र से नहीं, बल्कि उसके कर्म से मानता है। आधुनिकता वह है जो मानव–मानव को समान समझता है।

इस तरह कहा जा सकता है कि आधुनिकता का आरम्भ बुद्ध के समय में हुआ था और तबसे वह धारा बराबर चली आ रही है। यह तब होता है। जब व्यक्ति को आत्मबोध होता है। तब उसके मन में कई प्रश्न उठने लगते है वह वर्तमान की जिस परिस्थिति में जी रहा है क्या वाकई उस परिस्थिति में जी सकेगा? क्या वह परिस्थिति उसके अनुकूल है? जब–जब मानव समाज में किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह को अपनी ही बनाई गयी रूढ़ियों, आदि पर संदेह हुआ या वह उसे अपने प्रतिकूल पाया, तब–तब समाज में क्रांति की लहर दौड़ी है और उसने इन सबसे मुक्ति पाने के लिए अपनी आवाज बुलंद की है। जब लोगों ने अपनी विचारधारा,

चिंतनशक्ति का प्रयोग अपनी वर्तमान परिस्थिति सुधारने के लिए किया है। इन्हीं महत्वपूर्ण बिन्दु को आधुनिकता के बोध की संज्ञा दी जा सकती है।

अज्ञेय ने तीन सुप्रसिद्ध उपन्यासों को बहुत ही सरल एवं सहज भाषा में लिखने का प्रयास किया है। जिसमें 'शेखर एक जीवनी' भाग–एक, भाग– दो, 'नदी के द्वीप' 'अपने–अपने अजनबी' के सुप्रसिद्ध उपन्यास है। शेखर एक जीवनी का प्रकाशन दो भागो में विभाजित किया गया है। इनका प्रकाशन सन 1941 और 1944 में हुआ। यह मुख्यतः चरित्र प्रधान काव्य है। जिसमें शशि और शेखर की मार्मिक कहानी का चरित्र–चित्रण का वर्णन मिलता है। इन दोनो उपन्यासों के भागो में अज्ञेय कि दृष्टि में मनोवैज्ञानिक रही है। 'शेखर : एक जीवनी' में पात्रों की परिकल्पना, परिवेशगत बदलाव और विडंबनाओं के प्रभाव को दृष्टि में रखकर की गयी है। पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन परिवेश का सूक्ष्म अवलोकन करने के कारण शेखर की जिज्ञासावृत्ति कभी शांत नहीं होती है।

इस कारण से वह पीड़ा का शिकार बनता है। इस उपन्यास में आत्महीनता को त्यागकर जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टि को अपनाकर सार्थक जीवन बिताने का उपन्यासकार ने अपने पात्रों के माध्यम से संदेश दिया है। उपन्यासकार की यह स्पष्ट मान्यता रही कि व्यक्तित्व का विकास आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान की मिट्‌टी पर संपन्न होना आवश्यक है। अपने पात्रों के माध्यम से स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में व्यक्ति के बढ़ते कदमों की ओर संकेत करते हुए उपन्यासकार ने सच्चाई एवं ईमानदारी के रास्ते पर आगे बढ़ने का संदेश दिया है। उपन्यासकार ने अपने पात्रों के माध्यम से सच्चाई के रास्ते से हटने और चुगलखोर बनने की प्रवृत्ति की निंदा की है और इस प्रवृत्ति के बुरे परिणामों को जीवंत रूप में चित्रित किया है। मनोविज्ञान और समाजविज्ञान से जुड़े कई पक्षों से अभिज्ञ होने के कारण उपन्यासकार ने व्यक्ति और समाज की क्रिया–प्रतिक्रियाओं का यथार्थ अंकन बखूबी से किया है। अहंग्रस्त और कामपीड़ित शेखर के स्वभाव में वासना की प्रखरता को चित्रित किया गया है। सेक्सुवल अहं से ग्रस्त व्यक्ति की, अपनी प्रेयसी पर एकाधिकार की चाहत के बुरे परिणामों को चित्रित किया गया है। क्षणवादी दर्शन का स्पष्टीकरण शशि और शेखर के माध्यम से किया गया है। स्वप्नों के

प्रतीकत्व को समझाने और स्वप्न मनोविज्ञान की मदद से शेखर की वृत्तियों पर प्रकाश डालने में अज्ञेय को सफलता मिली है।

अज्ञेय जी ने अपने उपन्यासों में व्यक्ति जीवन और सामाजिक जीवन से जुड़े कई पक्षों को पूरी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। मूल्य सापेक्ष व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति के स्वतंत्र अस्तित्व की माँग अज्ञेय ने की है और सामाजिक व्यवस्था के विकास में व्यक्ति की भूमिका की सराहना की गयी है। व्यक्ति और समाज के आंतरिक यथार्थ को इन उपन्यासों में अभिव्यक्ति मिली है। अज्ञेय के जीवन की घटनाओं से, उन के आरंभिक दोनों उपन्यासों की कुछ घटनाओं का आभास जुड़ा हुआ मिलता है। व्यक्ति के अंतरंग का और युगीन परिवेश का सूक्ष्म परीक्षण करने की शक्ति, परिवेश बोध की विकसित चेतना, अनुभूतियों की ईमानदार अभिव्यक्ति और अद्भुत कल्पना शक्ति के सामर्थ्य के बल पर अज्ञेय ने उपन्यासों की रचना की है और अपनी सृजनधर्मिता का परिचय दिया है।

अध्याय प्रथम 'अज्ञेयका व्यक्तित्व और कृतित्व' में अज्ञेय आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे। शांत, संयमी, उनके व्यक्तित्व के प्रमुख अंग थे। वस्तुतः अज्ञेय के व्यक्तित्व के दो आयाम थे। एक सर्जनधर्मी लेखक और दूसरा परिस्थितियों के प्रहारों को झेलता हुआ। अज्ञेय का व्यक्तित्व विविधमुखी था साहित्य को समर्पित व्यक्तित्व होने के कारण इस व्यक्ति ने अपनी तमाम प्रतिभा विविध विधाओं में उड़ेल दी। अज्ञेय के इसी विविधमुखी व्यक्तित्व का परिचय देते हुए निराला ने 'अर्चना' ग्रन्थ पर लिखकर अज्ञेय को भेट की थी–"To ajneya, the poet writer and novelist, in the foremost rank." चिन्तनशीलता अज्ञेय की प्रमुख विशेषता रही है। हिन्दी कविता को चिन्तन की भूमि से जोड़ने का श्रेय उन्हें ही जाता है। इसीलिए मराठी के सुविख्यात विद्रोही कवि नामदेव ढ़साल कहते है कि 'अज्ञेय ने हिन्दी को एक चिन्तन कि दृष्टि दी।' व्यक्ति विकास के जीवन मूल्यों में तथा सोद्धेश्य साहित्य रचना करने वाले उपन्यासकारो में से अज्ञेय एक है। इस कारण व्यक्ति विकास की विशिष्ट जीवनदृष्टि का समावेश उनकी रचनाओं में हुआ दिखाई देता है। अज्ञेय के 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' तथा 'अपने–अपने अजनबी'

इन तीनो उपन्यासों में व्यक्तिवादी जीवन दर्शन दिखाई देता है। चिन्तन की मुख्य धारा अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में अपनायी है।

स्वाधीनता को महत्त्वपूर्ण मानवीय मूल्य मानते थे,परंतु स्वाधीनता उनके लिए एक सतत् जागरुकवृत्तांत, वैयक्तिक निबंध, वैचारिक निबंध, आत्मचिंतन, अनुवाद, समीक्षा, संपादनहै। उपन्यास के क्षेत्र में 'शेखरएक जीवनी' हिन्दी उपन्यास का एक कीर्तिस्तंभ बना। नाट्य–विधान के प्रयोग के लिए 'उत्तर प्रियदर्शी' लिखा, तो आंगन के पार द्वार संग्रह में वह अपने को विशाल के साथ एकाकार करने लगते हैं। अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनूदित किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के एकान्तमुखी प्रखर कवि होने के साथ–साथ वे एक अच्छे फोटोग्राफर और सत्यान्वेशी पर्यटक भी थे। अज्ञेय का कृतित्व बहुमुखी है और वह उनके समृद्ध अनुभव की सहज परिणति है। अज्ञेय की प्रारंभ की रचनाएँ अध्ययन की गहरी छाप अंकित करती हैं या प्रेरक व्यक्तियों से दीक्षा की गहराइयों का स्पर्श देती हैं, बाद की रचनाएँ निजी अनुभव की परिपक्वता की खनक देती हैं। और साथ ही भारतीय विश्वदृष्टि से तादात्म्य का बोध कराती है।

'नदी के द्वीप' और 'अपने–अपने अजनबी' में व्यक्ति की जीवन के प्रति आसक्ति व अनासक्ति, आत्म–समर्पण की मित्ति पर उदात्त प्रेम की परिकल्पना, व्यवस्था के प्रति असंतोष और व्यवस्था की अस्वीकृति के कारण पात्रों की खंडित–व्यक्तित्व चेतना का प्रकाशन आदि में उपन्यासकार अज्ञेय की क्षमता के कई प्रमाण मिलते हैं। 'नदी के द्वीप' में काम और प्रेम के द्वन्द्व को निराले ढंग से चित्रित किया गया है। आशावादी, किन्तु कुंठित व्यक्तित्व के रूप में भुवन की उपेक्षा से आहत नारी के रूप में रेखा का चित्रण पाया जाता है। ईर्ष्या मुक्त प्रेम के प्रतीकत्व को लेकर गौरा दिखाई देती है। इस रचना में काम, प्रेम तथा श्रृंगार संबंधी अवधारणाओं के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व की द्वीपीय परिकल्पना हुई है। अपने–अपने अजनबी में पात्रों की नवीन जीवन दृष्टि परिलक्षित होती है। पाश्चात्य विचारों और पश्चिम की मानसिकता को लिए हुए पात्रों की अज्ञेय ने यथार्थ परिकल्पना की है। इस रचना की यह विशिष्टता है कि अज्ञेय ने अपने पात्रों के

माध्यम से मृत्यु–दर्शन को दो भिन्न संदर्भो में देखने का सफल प्रयास किया है। अपने प्रतिनिधि पात्रों के माध्यम से अज्ञेय ने व्यक्ति की सत्ता का प्रतिपादन किया है और उस के पृथक अस्तित्व का प्रबल समर्थन किया है।

अध्याय द्वितीय 'आधुनिकता बोध का अर्थ एवं अवधारणा' इस अध्याय में आधुनिकता बोध, किसी युग तथा स्थान के समकालीनता की परिणति है। अज्ञेय उन व्यक्तियों में थे जो आधुनिकता को नयी चेतना और नयी संवेदना की परिधि में ग्रहण करते हैं। उसके अनुसार, 'आधुनिकता और भारतीयता में कोई बुनियादी विरोध नहीं है। आधुनिक होने का अर्थ यह नहीं है कि हम भारतीय बिल्कुल न रहें और पश्चिम की नकल करें। हम विश्व और भारत में बदली हुई परिस्थिति को पहचानें, तटस्थ होकर सही स्थिति आंकलन करें, मिटें नहीं, नये संस्कारी हों। अगर यह नहीं होता तो हम आधुनिक नहीं हैं। आधुनिक होने का अर्थ मात्र पश्चिम की नकल ही नहीं है, बल्कि संस्कारवान होने की प्रक्रिया' ही आधुनिकता है।

हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु को प्रायः सभी विद्वानों ने आधुनिक साहित्य के आरम्भिकता के रूप में स्मरण किया है। भारतेन्दु के समय की चेतना पुनर्जागरण से आच्छादित थी। फलतः सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पात्र में न सिर्फ अतिरिक्त सक्रियता की अपितु इनके बीच गहरा अंतःसम्बन्ध भी था, जिसका प्रभाव कविकर्म पर पड़ा जो उस काल के साहित्य में प्रतिबिम्बित भी है। फिर भी रचना के स्तर पर, विशेषकर भाषा के स्तर पर भारतेन्दु ने मध्यमार्गी रुख अपनाया। उनकी काव्य भाषा ब्रज तथा ग्रंथ लेखन खड़ी बोली में है। कालांतर में भारतेन्दु द्वारा खड़े किये गये खड़ी बोली के आन्दोलन को मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द आदि रचनाकारों ने खड़ी बोली को कविता स्वंगद्य की सर्जनात्मक भाषा बनाने की दिशा में भरसक प्रयत्म किये।

बीसवी सदी के आरम्भिक दौर में जीवन के प्रति देखने का नजरिया बदलता गया। इसी बात को उजागर करते हुए भोला भाई पटेल लिखते है, ''इस शती के साहित्य पर एक ओर यत्र विज्ञान का, दूसरी ओर मनोविज्ञान आदि का प्रभाव रहा है। इन सब परिबलो से आधुनिकता का नया बोध पैदा हुआ है। इसका धरातल

अंतर्राष्ट्रीय है। भारतीय साहित्य पर उसका असर हुआ। प्रतीकवाद, विम्बवाद, अतियथार्थवाद, आदि कविता आन्दोलनों के साथ वादलेयर, पाउंड और इलियट कवियों के सर्म्पक ने भारतीय सर्जक चेतना को उद्वेलित किया। हिन्दी साहित्य में अज्ञेय आदि कवियों के कविता आधुनिक साहित्य के इस वैश्विक धरातल से अनुप्राणित है। भारतीय साहित्य में अनेक भाषाओं में आधुनिकता के पद चिन्ह अंकित होने लगे। आधुनिकता के प्रधान वैशिष्टयों को लेकर हिन्दी का आधुनिककालीन साहित्यकार साहित्य की सर्जना करने लगा। जिसमें मुख्य रूप से प्रयोगशीलता, अस्तित्वदाद, आधुनिक भाव–बोध, अमूर्मता, बौद्धिकता, रूपवादिता और अनुभव की विशिष्टता स्मृतिहीनता मूल्यहीनता और परम्परा से मुक्ति, समसामायिकता, महानगरीय बोध तथा नया कला बोध आदि आधुनिक संवेदन की वृत्तियों की पुष्टि होने लगी। समाज जीवन के बदलते सामाजिक आर्थिक ढ़ाचे का परिदृश्य साहित्य के प्रागण में खुलने लगा। हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द का आगमन एक नई भावभूमि के साथ हुआ। आधुनिकता की चेतना साहित्य सर्जना की विधि का ही एक अंग है, इसकी झलक प्रेमचन्द साहित्य से हुई है।

अध्याय तृतीय 'अज्ञेय के उपन्यासों में आधुनिकता बोध' इस अध्याय में अज्ञेय के उपन्यासों एवं कहानियों का कथ्य नई कहानी हिन्दी कहानी साहित्य इतिहास में एक आन्दोलन के रूप में आ गई जिनमें बदलते परिप्रेक्ष्य को सच्चाई के साथ उभारने की कोशिश बहुत ही सजीव ढंग से प्रसारित हुई है। आधुनिक जटिलता का संकीर्ण रूप जिसके विभिन्न आयाम अज्ञेय की कहानी में उपलब्ध है। हिन्दी में आधुनिकता के आयामों को उतारनेवाले आरंभिक दौर के उपन्यासकारों में अपनी कुछ अन्यतम विशेषताओं के कारण अज्ञेय हमें सबसे अधिक आकर्षित करते हैं। अज्ञेय के उपन्यास साहित्य का अपना विशेष स्थान बना हुआ है। नई कहानी हिन्दी कहानी के इतिहास में एक आन्दोलन के रूप में आ गई जिनमें बदलते परिप्रेक्ष्य को सच्चाई के साथ उभारने की कोशिश बहुत ही सजीव ढंग से प्रसारित हुई है। कहानीकार प्रेमचन्द को नहीं भूल सकते है, उनके अनुभव बोध के वे ऋणी ही हैं उसी प्रकार कहानी के रूप को और विकसित करने में अज्ञेय जैसे कहानीकार का योगदान कम महत्व नहीं है। इस सन्दर्भ को सही अर्थ में तलाशने

का कार्य अज्ञेय ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया। आधुनिक जटिलता का संकीर्ण रूप जिसके विभिन्न आयाम अज्ञेय की कहानियों में उपलब्ध है। उनकी कहानियों से हिन्दी कहानी एक प्रौढ़ परंपरा के रूप में विकसित होती है और अर्थ संकेतों का ग्रहण करने की प्रक्रिया भी शुरू होती है।

अज्ञेय का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण फ्रायड से प्रभावित है। अज्ञेय के प्रथम उपन्यास शेखर एक जीवनी विशुद्ध मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से शीशु मानस का सफल निरूपण हुआ है। अज्ञेय के सभी पात्र अंह भाव से प्रभावित के कारण व्यष्टवादी अज्ञेय ने आधुनिकता को अधिक गहरे रूप में स्वीकारा है। अज्ञेय ने जिस समय शेखर एक जीवनी की रचना की, वह आधुनिक चेतना का युग था। आधुनिक उपन्यासों में मनोविज्ञान के प्रयोग से उपन्यासो के क्लेवर में अन्तर आया। आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के सन्दर्भ में अज्ञेय का कथा साहित्य देखा जाय तो वह एक ओर भारतीय जनजीवन, भारतीय जनजीवन की चेतना तथा विषमताओं आदि का यर्थाथ चित्रण करता है। तो दूसरी ओर अपनी शैली शिल्प तथा मानव मन की शाश्वत अनुभूतियों को कलात्मक ढ़ग से स्पष्ट करता है। अज्ञेक के सम्पूर्ण कथा साहित्य में आधुनिक युग का यर्थाथ और पूर्ण प्रतिविम्ब दिखाई देता है। शिल्प विधान की दृष्टि से अज्ञेय की कथा साहित्य आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में अज्ञेय का एक विशेष स्थान है। आधुनिक काल के उपन्यासों की तुलना में परिमाण की दृष्टि से थोड़ा लिखने के बाद भी अज्ञेय ने हिन्दी साहित्य परम्परा में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है।

'शेखर एक जीवनी' इस उपन्यास की मुख्य विशेषता इसकी व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि है। अज्ञेय व्यक्तिवादी दृष्टि के प्रकाश में ही आधुनिक युग की समस्याओं के समाधान को ढूढ़ता है। इसमें व्यक्त के महत्व को सबसे उपरी स्थान दिया है। 'अपने अपने अजनबी' अज्ञेय जी का तीसरा प्रमुख उपन्यास है। इसमें भी अज्ञेय की व्यक्तिगत विशिष्टता प्रयोग की नवीनता देखने को मिलती है।ये एक प्रतिकात्मक और दुखान्त उपन्यास है यह एक प्रथम आधुनिक तथा अस्तित्ववादी उपन्यास है। उन्होंने आधुनिकता के विज्ञान विरोधी पक्ष को ग्रहण किया है।

अध्याय चतुर्थ 'अज्ञेय के कहानियों में आधुनिकता बोध'इस अध्याय मेंअज्ञेय की कहानियों में मात्र कल्पना ही नहीं है, बल्कि वास्तविक रूप से भोगी गयी मनः स्थितियों का और सचमुच के वैचारिक अतः द्वन्द्र का बल है। अज्ञेय की कहानियों में जो नैतिक अन्तर्द्वन्द्व और प्रश्नाकुलता है, वह आज भी कम प्रासंगिक नहीं है। नम्बर दस नामक कहानी में एक पात्र का मानसिक अन्तर्द्वन्द्व दर्शनीय है। इसी दुनिया के लिए मैं इतनी फिक्र में पड़ा हूँ इसी के लिए मर रहा हूँ ? इसी हृदयहीन दुनिया के लिए मैं अपने जिगर का खून दे रहा हूँ ? ऐसी–की–तैसी दुनिया की। सोच ही सब रोगों की जड़ है, वही तो है जिससे छुटकारा लेना चाहिए। पाप–पुण्य क्या है? सोचें तो चोरी है, सोचें तो ठीक है। सब चोर हैं, सब भले हैं।' अज्ञेय ने अपनी कहानियों में जितनी भी सामाजिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक और साम्प्रदायिक समस्याओं और प्रश्नों को उठाया है, उन सब का अध्ययन उन्होंने व्यक्तिगत पहलुओं से किया है। कथाकार अज्ञेय व्यक्ति के चरित्र के अध्ययन और प्रस्तुति में एक अत्यन्त सफल मनोवैज्ञानिक रहे हैं, जिस पर उन के आदर्शवाद और मानवतावाद का गहरा और प्रत्यक्षप्रभाव रहा है। अज्ञेय के अनुसार, ये कहा नियत आहत मानवीय संवेदन की और मानव मूल्यों के आग्रह की कहानिया है। और मेरा यह मानवतावाद फिर एक प्रकार का आदर्शवाद है। अज्ञेय जी हमेशा व्यक्ति–संवेदना के संस्कार की बात करते थे। वह मानवीय संवेदना की संकीर्णता और कृत्रिमता से मुक्ति चाहते थे। संकीर्णता एक हिंसा है, कृत्रिमता भी हिंसा है। दोनों एकरूपता की ओर ले जाती हैं। दोनों ही 'सृजनात्मकता'और 'विविधता'की शत्रु हैं। यह अधिक कहने की जरूरत नहीं है कि अज्ञेय 'सृजनात्मकता' और 'विविधता' पसंद करते थे। वैश्वीकरण का दौर भी सृजनात्मकता और विविधता का भक्षक है अज्ञेय का सृजनात्मकता से प्रेम सर्वविदित है। वह विविधता को कितना पसंद करते थे, यह सप्तक के कवियों के चयन में देखा जा सकता है। इनमें सिर्फ उनके हमदम और हमराही नहीं हैं। अज्ञेय के निजी जीवन में कम विविधता नहीं है। वह देश में भी कहाँ–कहाँ नहीं घूमे है। उन्होंने कितने ही जीव–जंतुओं, वन के पेड़–पौधों और प्रकृति की चीजों से रिश्ता बनायाहै। इन सब का साक्ष्य उनकी कविताएँ हैं।

अज्ञेय की सर्जनात्मक कुशलता कहानी लेखन में भी देखी जा सकती है। उनकी कहानियों में मनोविश्लेषणवादी प्रभाव दिखाई देता है। जिसे 'विपथगा' (1937) पंरपरा (1944) कोठरी की बात (1945) शरणार्थी (1949) अमर वल्लरी, जयदोल (1951) और ये तेरे प्रतिरूप अज्ञेय की प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। प्रेम क्रांतिकारी जीवन रोमान्स और वासना तथा सामाजिक सन्दर्भो से सम्बधित मुख्य कहानी में परिलक्षित होते है।

हमारी मनुष्यता, आधुनिकता और जनतंत्र का एक लक्षण यह है कि हम दूसरे को जो हमराही नहीं हैं, हमसे सहमत नहीं हैं, हमारे परिवार–जाति–धर्म के नहीं हैं, हमजीव नहीं हैं, उनसे हम कितना खुला रिश्ता बनाते हैं। अज्ञेय के जीवन और साहित्य को देख कर बेखटक कहा जा सकता है कि वह एक उदारवादी भारतीय बुद्धिजीवी हैं। आज हम चारों तरफ ऐसे लोग देख सकते हैं, जिनमें अहं भरा हुआ है। इस वातावरण में अज्ञेय की कविता पढ़ना एक भिन्न अनुभव दे सकता है। यह हमारे मन में भारतीय परंपरा के एक व्यापक प्रेम की उर्वरता ला सकता है।एक समय अज्ञेय का काफी विरोध हुआ, क्योंकि जनता की मुश्किलों और जन आंदोलनों के 50–60 के उन कठिन दशकों में वह इन सब से विमुख थे। उन्होंने एक आभिजात्य धारण कर रखा था। उस दौर में उनसे टकरा कर ही कई साहित्यिक प्रवृत्तियाँ अस्तित्व में आ सकती थीं, जो आईं। उनका विरोध उनकी शक्ति का द्योतक था।

अध्याय पंचम 'अज्ञेय के कथा साहित्य में चारित्रिक सृष्टि के विविध आयाम' में भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य के आचार्यों ने साहित्य में पात्रों के चरित्र को महत्वपूर्ण अंग स्वीकार किया है अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं को व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। उपन्यास के पात्रों के चरित्र को पाठक के सामने उनके गुणों व अवगुणों के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने पाश्चात्य जगत के मनोविश्लेषक विद्वानों एवं भारतीय उपन्यास के सिद्धान्तदर्शी को स्वीकार करते हुए विविध प्रणालियों का प्रयोग किया है। उपन्यासकार ने बहिरंग प्रणाली के अन्तर्गत पात्रों के नामकरण, पात्रों का प्रथम परिचय, स्थिरांकन, प्रतिक्रिया चित्रण और अपने द्वारा की टीका–टिप्पणी द्वारा पात्रों का उपन्यास में

प्रवेश उनका स्वरूप, उनके संवाद और पाठक को उपन्यास के उद्देश्य तक पहुँचान का, कार्य बखूबी सम्पन्न किया है। भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य के आचार्यों ने साहित्य में पात्रों के चरित्र को महत्वपूर्ण अंग स्वीकार किया है अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं को व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। उपन्यास के पात्रों के चरित्र को पाठक के सामने उनके गुणों व अवगुणों के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने पाश्चात्य जगत के मनोविश्लेषक विद्वानों एवं भारतीय उपन्यास के सिद्धान्तादर्शो को स्वीकार करते हुए विविध प्रणालियों का प्रयोग किया है। उपन्यासकार ने बहिरंग प्रणाली के अन्तर्गत पात्रों के नामकरण, पात्रों का प्रथम परिचय, स्थिरांकन, प्रतिक्रिया चित्रण और अपने द्वारा की टीका–टिप्पणी द्वारा पात्रों का उपन्यास में प्रवेश उनका स्वरूप, उनके संवाद और पाठक को उपन्यास के उद्देश्य तक पहुँचान का, कार्य बखूबी सम्पन्न किया है।

यह निर्विवाद सत्य है कि अज्ञेय जी ने अपने सभी उपन्यासों में व्यक्तिगत आस्था को स्वाभाविक तथा नैसर्गिक रूप देकर उसे सृजनशोलता के साँचे में ढालने का सफल प्रयास किया है। उन्होंने अपने पात्रों की मानसिक भावों को सामजस्यपूर्ण वातावरण में प्रस्तुत किया है। अज्ञेय जी ने अपने प्रत्येक पात्र के चरित्र–चित्रण को सामाजिक परिवेश के साथ जोड़कर देखा है। इसी तथ्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उन्होंने चरित्र– सृष्टि की अनेक प्रणालियों का प्रयोग किया है। वे चरित्र चित्रण के प्रसंग में इस मान्यता को अधिमान देकर चले हैं कि व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का प्रेरक तथा संचालक केवल मन ही होता है। इस संदर्भ में उन्होंने पाश्चात्य जगत के मनोविश्लषक विद्वानों एवं भारतीय उपन्यासकारों के सिद्धान्तादर्शा को स्वीकार करते हुए चरित्र–चित्रण की विविध प्रसंगों में अपनी मूलभूत आलोचनात्मक निष्ठा को भी मिश्रित किया है। उन्होंने चरित्र चित्रण की प्रत्यक्ष शैलियों में व्यक्तिगत विवेक का प्रयोग करते हुए पात्रों को आदर्श रूप देने का प्रयास किया है।

अज्ञेय ने मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करके बाल मनोविज्ञान से लेकर व्यस्क की कुंठाएँ, आकांक्षाएँ, इच्छाएँ, हीनत्व बोध, अहम् स्थापन, मानसिक संघर्ष, दोहरा व्यक्तित्व जैसी मनोवैज्ञानिक समस्याओं को कलात्मक एवं साहित्यिक रूप

प्रदान किया। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की दृष्टि से अज्ञेय के उपन्यास हिन्दी साहित्य के बेजोड़ उपन्यास हैं।

अज्ञेय बहिरंग व अंतरंग प्रणाली का श्रेष्ठत्तर प्रयोग कर अपनी रचनाधर्मिता को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करते हैं। अज्ञेय ने उपन्यासों में घटनाओं का समावेश पात्रों की मनः स्थिति को उभारने के लिए किया है। अज्ञेय के उपन्यासों में छोटे–छोटे संवादों का प्रयोग हुआ है परन्तु सार्थक शब्दों में पूर्ण स्पष्टीकरण के साथ प्रस्तुत हुए हैं। कथोपकथन द्वारा ही अज्ञेय के उपन्यासों में स्वभाविकता, मार्मिकता व व्यंजनात्मकता का समावेश हुआ है। कथोपकथन का वर्णन अज्ञेय के उपन्यासों में चरित्र की मानसिक स्थिति के स्पष्टीकरण हेतु जितनी सफलता के साथ किया गया है वह वास्तव में बड़ी कुशलता का ही कार्य है। अन्य पात्रों की टीका–टिप्पणी का प्रयोग अज्ञेय ने प्रधान पात्रों के चरित्र को उजागर करने के लिए किया है। अन्य पात्रों की टिप्पणियों के माध्यम से उपन्यासकार ने बहुत ही कलात्मक ढंग से पात्रों के भावों, अनुभावों को तथा गुणों व अवगुणों को दर्शाया है। अंतः कथनीय है कि अज्ञेय के औपन्यासिक सृजन की ये प्रणालियाँ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं जो अज्ञेय को आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य का महान् उपन्यासकार सिद्ध करती हैं।

अध्याय षष्ठम 'अज्ञेय के कथा साहित्य में भाषा एवं रूप विधान' इस अध्याय में अज्ञेय की मनोवैज्ञानिक कहानियो को छोड़कर बाकी सारी कहानियो में उनका कहानीकार रूप नया है। मानवीय संवेदना और यथार्थ बोध के व्यापक क्षितिजों को ग्रहण करने का सफल प्रयास उनकी कहानियों में लक्षित होता है। उन्होंने व्यक्तियो से माध्यम से विस्तृत परिप्रेक्ष्य के सही अर्थ बोध का कराने कार्य किया है। कहानियों के क्षेत्र में अज्ञेय को पूर्ण सफलता तो नहीं मिली। लेकिन सफलता जो की शुरूआत अज्ञेय से ही माननी चाहिए। इतना सब कुछ होते हुए भी हम यह बता सकते है कि अज्ञेय के रचना संसार में कहानियां एक क्षीण पक्ष ही है। अज्ञेय के उपन्यासों में प्रयुक्त और एक विशिष्ट शैली हैं– पत्रात्मक शैली यह आत्मकथात्मक शैली का निकटतम रूप ही है। इस प्रकार की शैली में संपूर्ण वस्तुविधान, घटना–व्यापार और चरित्र–चित्रण के विकास क्रम को पत्रों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। पत्रों के द्वारा पात्रों की मनः स्थिति को सही ढंग से समझने में सहायता मिलती है।

वैसे तो अज्ञेय जी मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के लिए पत्रात्मक शैली का प्रयोग अपरिहार्य हो जाता है।

'शेखर : एक जीवनी' में घटना व्यापार पात्रों की मनः स्थिति तथा चारित्रिक विशेषताएँ पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत की गयीं। शशि की शादी का प्रसंग, मौसी विद्यावति तथा पिता का शेखर के पास आना, मौसी का शेखर को किताबें भेजना आदि स्थलों पर इस प्रकार की शैली का प्रयोग मिलता है। यथा– ''शेखर को एक पत्र मिला फिर वह भूखी आँखों से पत्र निगलने लगा''शशि का विवाह हो रहा था। वर का चुनाव हो गया था, आषाढ में तिथि भी नियत हो गयी थी और शशि विवाह नहीं करना चाहती थी। अगर शेखर जेल के बाहर होता तो वह उसकी सहायता माँगती।

अब की बार शशि का पत्र छोटा था। शेखर से वह सहमत थी कि जीवन में हरएक को अपना मार्ग स्वयं खोजना होता है। ''तुम ने लिखा है निर्णय मेरा है, पर उसका आदर करना तुम्हारा कर्तव्य है, तुम ने लिखा है एक निश्चय में मुझे तुम्हारा आंतरिक आशीर्वाद मैंने माँ से कह दिया है कि मुझे इस मामले में किसी तरह की कोई दिलचस्पी नहीं है, उन की आज्ञा मुझे शिरोधार्य है।''

'शेखर : एक जीवनी' से प्रारंभ होनेवाली यह पत्रात्मक शैली 'नदी के द्वीप' तक आते–आते विकास को प्राप्त करती है, जहाँ पत्रों के माध्यम से पात्रों की कथा चित्रित मिलती है। उपन्यास के सब पात्र एक दूसरे से पत्राचार करते रहते हैं। 'नदी के द्वीप' का 'अंतराल' भाग पूर्णतः इसी शैली पर निर्मित है और उपन्यास की समाप्ति भी इसी शैली से होती हैं।

'नदी के द्वीप' जो पत्रात्मक शैली का नमूना है, उस में पत्रात्मक शैली के विविध रूप मिलते हैं। 'नदी के द्वीप' में प्रयुक्त पत्रात्मक शैली का पहला रूप वह है जहाँ एक पात्र दूसरे पात्र को पत्र लिखता है। लेकिन पत्र को, सीधे उस के नाम पर न भेज कर उससे संबंधित व्यक्ति के नाम पर भेज दिया जाता है। फिर वह व्यक्ति अपने पत्र के साथ उस पत्र को सही पात्र के पास भिजवाने की व्यवस्था

करता है। उदाहरण के रूप में भुवन के नाम पर रेखा के पत्र को ले सकते हैं यथा– ''रेखा भुवन को पत्र लिखती है लेकिन भेजती है चन्द्रमाधव के पते पर चन्द्रमाधव उस पत्र के साथ और एक पत्र को लिखकर भुवन के नाम पर भिजवाता है।

इस उपन्यास में प्रयुक्त पत्रात्मक शैली का दूसरा रूप है– उपन्यास के सभी पात्र आपस में पत्र व्यवहार करते रहते हैं। पत्रात्मक शैली का तीसरा रूप वह होता है जहाँ पात्र तो पत्र लिखता है लेकिन भेजता नहीं, स्वयं उसे नष्ट कर देता है।'नदी के द्वीप में पत्रात्मक शैली की अंतिम परिणति इसी में होती है यथा– भुवन गौरा को पत्र लिखता है, लेकिन भेजता नहीं, अंत में उसे फाड़ डालता है और सोचता है कि गौरा को अपने कुशल समाचार का और पत्र लिख देगा वह पत्र में गौरा को क्या लिखेगा? गौरा से क्या पूछेगा? लिखने की इसी लाचारी की स्थिति में उपन्यास समाप्त होता है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में अज्ञेय का उत्तुंग सारस्वत व्यक्तित्व सदैव आकर्षक और प्रेरणादायक रहा है। उनकी बहुमुखी प्रतिमा की उपलब्धियों से हिन्दी साहित्य अवश्य समृद्ध हुआ है। अपने उपन्यासों और कहानियों के द्वारा उन्होंने आधुनिकता के नए आयाम की ओर संकेत किया है। उपर्युक्त दोनों विशालो में रचनारत उनकी महकती प्रतिभा ने विश्व साहित्य की अनेक आलोक किरणों को आत्मसात्कर हिन्दी साहित्य पर आधुनिक विश्वसाहित्य की चेतना की छाप छोड़ दी है।